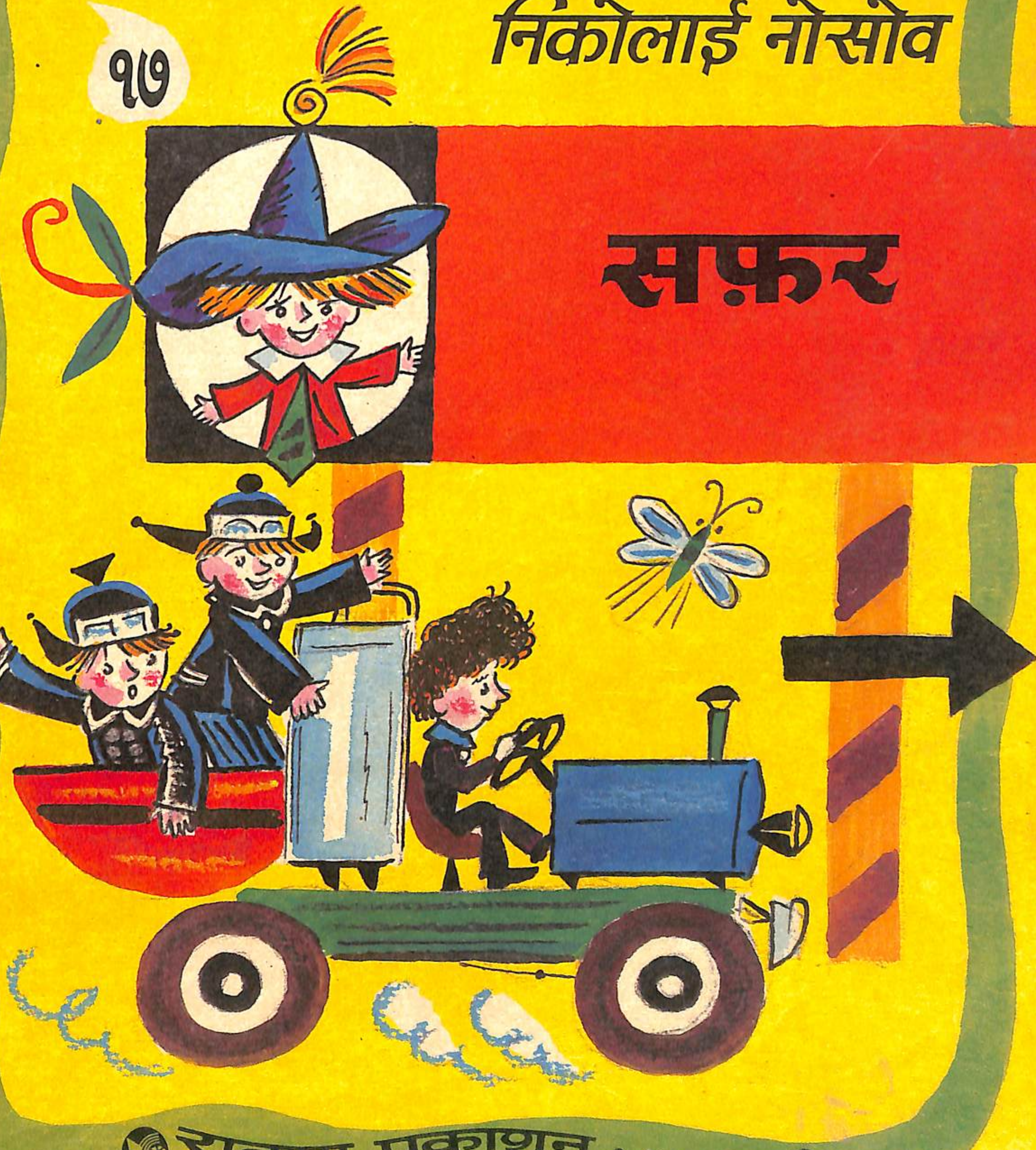
नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

१७



सफ़र

राडुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

१७

सफ़र

अनुवादक:
संगमलाल मालवीय

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001





एक-एक कर मैदान में आओ,
मिल-जुल कर कतार बनाओ,
शुरू करो व्यायाम से दिन,
आलस को तुम दूर भगाओ!

कवि गुलदस्ता का लिखा यह व्यायाम-गीत मोड़ू और पेंचू मिलकर गा रहे थे।

हरित नगर के निवासी अभी मीठी नींद में सो रहे थे कि ये दो छुटके कदम से कदम मिलाते, व्यायाम-गीत गाते, सड़कें रौंदते और पी० टी० करते हुए चले जा रहे थे। शाम को ही—एक दिन पहले उन्हें पता चल गया था कि अस्पताल से छुट्टी मिलनेवाली है, ताकि वे छुटकियों की कार की मरम्मत कर

सकें। और इसीलिये सूरज उगने से पहले, जब उसकी लालिमा भी न दिखी थी, वे उठ बैठे और लगे कहने कि उन्हें छोड़ दिया जाय। शरारत और शोरगुल से घबड़ानेवाली मधुरिमा उन्हें जल्दी से जल्दी आज़ाद कर देना चाहती थी। उनके कपड़े वापस दिए जा चुके थे।

और अब वे सड़क पर लेफ़्ट-राइट करते हुए चले जा रहे थे। दूर से ही उनके गीत के बोल सुनकर अनेक छुटकियों की नींद खुल गई। वे खिड़कियों के पास खड़ी होकर झांकने लगीं, कुछ छुटकियां बाहर सड़क पर भी आ गईं।

"अरी, छुटकियो, अपना मोटर गैराज बताओ न!" मोड़ू ने चिल्लाकर कहा।

"आइये, मैं चलती हूं।" रोयेंदार कालरवाला ओवरकोट पहने और लाल हैट लगाये एक छुटकी ने कहा।

"किधर जाना है, दायें या बायें?" मोड़ू ने कहा।



"दायें," उस छुटकी ने कहा, उनकी चमड़े की जैकेटों को उत्सुकता से देखते हुए, जो छुटके पहने हुए थे।

"दायें मुड़! तेज़ चल!" मोड़ू ने कहा और मुड़ते हुए वे सड़क पर चलने लगे। "दायें-बायें! दायें-बायें!"

पेंचू कदम से कदम मिलाते हुए उसके पीछे-पीछे चल रहा था और उनकी गाइड – रास्ता बतानेवाली छुटकी – दौड़ती, छलांगें मारती बमुश्किल पीछा कर पा रही थी।

दौड़ते-दौड़ते मोड़ू और पेंचू गैराज से काफी दूर निकल गए।

इस बीच मोड़ू ने गैराज में झांककर देखा, अन्दर एक कार खड़ी थी। इस





समय कुछ और छुटकियां गैराज तक आ धमकी थीं।

"अन्दर तो अन्धेरा है," मोड़ू ने कहा, "चलो, कार बाहर निकाली जाय।"

"लेकिन यह खराब है, चलती नहीं," छुटकियों ने कहा।

"कोई बात नहीं, धक्के ही लगायेंगे। चलिये, ज़ोर लगाइये। चाल दिखाओ – एक, दो! मोटर ठेलो – एक, दो!"

कार घरघराने लगी। एक कर्कश आवाज़ गूंजते ही कार लुढ़कने लगी।

मोड़ू और पेंचू पलक झपकते ही कार के नीचे पहुंच गए और उसका मुआयना करने लगे। छुटकियां कार को घेरे खड़ी थीं और हैरानी से कार के नीचे ताक-झांक कर रही थीं।

"तो यह बात है! टंकी लीक कर रही है," कार के नीचे से "टप, टप, टप" की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

"एक नट ही गायब है। सीरप सप्लाई करनेवाला पाइप ही फट गया है।"



अन्त में वे कार के नीचे से बाहर निकल आए।

"जाइये, प्लास, स्पैनर, सोल्डरिंग आयरन और हथौड़ी ले आइये," मोड़ू ने छुटकियों से कहा।

"लेकिन हमारे यहां ये चीज़ें नहीं हैं!"



"आखिर हैं क्यों नहीं? आपके पास क्या-क्या चीज़ें हैं?"

"आरी है, कुल्हाड़ी है।"

"वाह, वाह! आप लोग भी! कुल्हाड़ी से कहीं कार की मरम्मत होती है? यहां कहीं आस-पास छुटके रहते हैं?"



"छुटके सिर्फ़ पतंग नगर में रहते हैं!"

"दूर है?"

"करीब एक घण्टे का रास्ता है!"

"घण्टा भर तो आपके लिए है, हम तो जल्दी पहुंच जाएंगे। लेकिन वहां पहुंचा कैसे जाए?"

"आगे सड़क से मुड़ जाइये, फिर वहां सीधे, बिल्कुल सीधे बढ़ते जाइये। फिर एक रास्ता मिलेगा, मैदान को पार करते हुए सीधे बढ़ते जाइये, बस पतंग नगर पहुंच जाएंगे!"

"समझ लिया," मोडू ने कहा, "तेज़ चल! लेकिन ठहरो!"–उसने आदेश दिया। "और, सभी छुटकियां, हमारे लौटने तक कपड़े से कार की धूल साफ़ करें, उसे भरपूर चमकायें! मोटर, मेरे दोस्तो, सफाई पसन्द होती है!"

"ठीक है, हम उसे साफ करेंगे," छुटकियों ने वायदा किया।



"तो अब हम चलते हैं!"
वे दोनों सड़क पर लेफ़्ट-राइट करने लगे।
दायें मुड़कर मोड़ू ने आदेश दिया:
"गीत शुरू किया जाय!"
और हमारे दोस्त भरपूर ताकत से यह गीत गाने लगे:

बाग में, बागान में
कर रहा था मैं सैर,
साथ में दोस्त मेरा,
खा रहा था बैर!

तभी अचानक मेढक उछला,
मुंह से निकली – आह!
भागे सर पर पैर लिये,
कित्ते बहादुर हैं हम, वाह!



यह गीत खत्म होते ही दूसरा गीत शुरू हो गया, फिर तीसरा और चौथा गीत गाते हुए वे आगे बढ़ते रहे।

जल्द ही वे नगर के बाहर पहुंच गए और मैदान पार करने लगे। चलते हुए अभी घण्टा भर न हुआ था कि पतंग नगर दिखने लगा। ठीक इसी वक्त मोड़ू और पेंचू ने सड़क के बीचोंबीच खड़ी एक मोटर को देखा। ज़रा और करीब पहुंचे तो एक छुटका मोटर के नीचे दिखाई दिया। शायद मोटर की मरम्मत कर रहा था। वह कालिख पुती पतलून पहने था; बाहर सिर्फ टांगें दिख रही थीं।

"ए, भाई, धूप सेंक रहे हो?" पेंचू ने चिल्लाकर कहा।

काले घुंघराले बालोंवाले छुटके ने सिर बाहर निकालकर झांका:

"हां, भाई, मोटर के नीचे धूप का मजा ले रहे हैं," उसने उत्तर दिया।

"आखिर क्या हुआ?"

"कलमुंही, नखरे दिखाती है। भाई, या तो सीरप चुक गया है या सोडा वाटर की खुराक ज़्यादा हो गई है। नामालूम क्या बात है!"

छुटका बाहर निकल आया। और उसने कार के पहिये पर एक ज़ोरदार लात मारी।

उसकी जैकेट भी पतलून की तरह कालिख और तेल से बुरी तरह सनी हुई थी, जैसे चमड़े की बनी हो। यानी बेचारे उस छुटके का सारा वक्त मोटर चलाने से ज़्यादा उसकी मरम्मत और तरह-तरह की तीमारदारी में निकल जाता था। खासकर ये सोडा वाटर से चलनेवाली मोटर-कारें अक्सर अपने मालिकों का कचूमर ही निकाल देती हैं।

मोड़ू मोटर के चारों ओर घूम-घूमकर उसकी जांच-परख करता रहा। जब ऊपर कोई खराबी नज़र न आई तो वह कार के नीचे घुस गया। वह कुछ देर वहां अक्ल दौड़ाता रहा, फिर बाहर निकल आया और खड़े होकर सिर खुजलाने लगा। मोड़ू के बाद पेंचू मोटर के नीचे घुसा, लेकिन कोई नतीजा न निकला। इसके बाद मोटर मालिक पहले की तरह फिर मुआयना करने लगा। इस तरह वे कभी बारी-बारी से मोटर के नीचे घुसते, कभी हैरानी से उसे देखते और सिर खुजलाते खड़े रहते।

अन्त में मोड़ू ने मोटर की खराबी का कारण ढूंढ़ निकाला। देखते ही देखते मोटर चल पड़ी। मोटर मालिक ने खुशी से मोड़ू और पेंचू से हाथ मिलाया और कहा:

"धन्यवाद साथियो! आपकी मदद के बिना तो मैं शाम तक धूप सेंकता रह गया होता। आपको कहां जाना है? बैठिये, जहां कहें, पहुंचा दूं।" मोड़ू और पेंचू ने अपने सफर का कारण बताया।



"प्लास, स्पैनर और हथौड़ी तो है मेरे पास, सिर्फ सोल्डरिंग आयरन नहीं है," मोटर मालिक ने कहा।

"क्या सोल्डरिंग आयरन आपके पतंग नगर में नहीं मिल सकता?"

"क्यों नहीं? हमारे मैकेनिक बोल्टू के पास ज़रूर होगा। चलते हैं उसके पास।"

वे तीनों मोटर में बैठ गए और कुछ ही मिनट में पतंग नगर की मुख्य सड़क पर पहुंच गए।





Н. Носов

ПОХОД

На хинди

N. Nosov

BENDUM AND TWISTUM GO
TO KITE TOWN

In Hindi







प्यारे बच्चो,

नजानू और उसके दोस्तों के रोचक कारनामे आपको ज़रूर पसन्द आये होंगे। नजानू की कहानियों के इस क्रम में फूलनगर के निवासियों के बारे में आप हमारे यहां से प्रकाशित होनेवाली आगामी पुस्तक में पढ़ेंगे :

पतंग नगर में

ISBN 5-05-000982-0

ISBN 5-05-003229-6